श्री णमोकार विधान

ॐ अर्थात् त्रिकाल परमेष्ठी

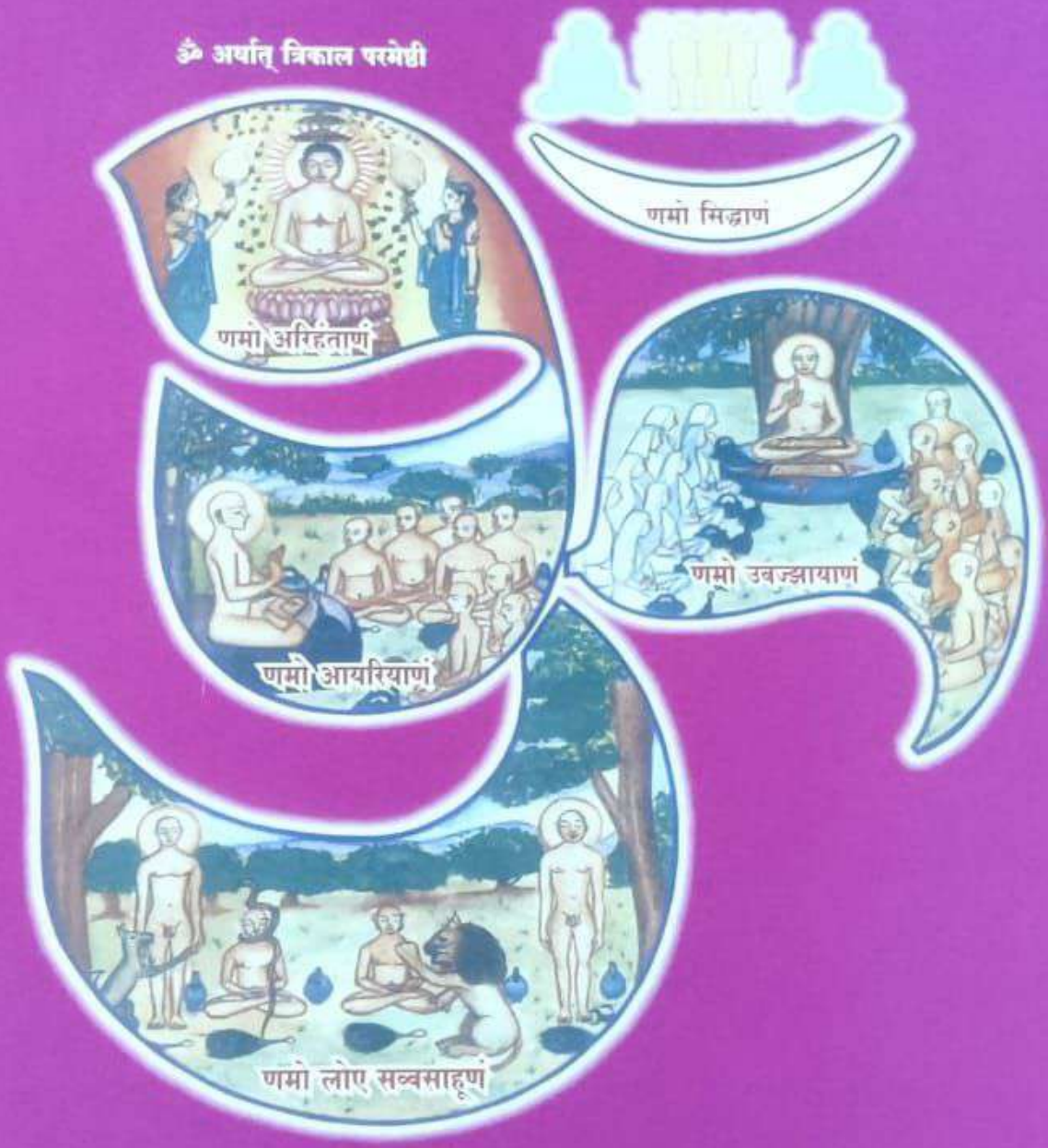

संपादन : दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

णमोकार विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद–ग.ग.आचार्य कुंथुसागरजी	7
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें–आचार्य कनकनन्दीजी	8
3.	सम्पादकीय–आशीर्वाद – आचार्य गुप्तिनन्दीजी	10
4.	जैन धर्म में भावना का महत्त्व – मुनि महिमासागरजी	15
5.	धर्म कर्म निवर्हणम् – मुनि सुयशगुप्तजी	17
6.	भादो भी होगा भक्ति का सावन – मुनि चन्द्रगुप्तजी	18
7.	स्व कथ्यम् – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	19
8.	तीर्थंकर पद की हेतू, सोलहकारण भावना– गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	20
9.	विधान मंडल	37
10.	विनय पाठ	40
11.	पूजा आरम्भ	41
12.	नित्यमह पूजन–गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	46
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन–आचार्य गुप्तिनंदीजी	50
14.	ऋद्धि मंत्र	53

णमोकार विधान

101.	श्री णमोकार पूजा विधान	407
102.	विधान प्रारम्भ	411
103.	समुच्चय जयमाला	419
104.	प्रशस्ति	422
105.	आरती	423

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्गति कराता है, सद्गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यसहित भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी** ने त्रिकाल चौबीसी और पंचकल्याणक विधान लिखे हैं और **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान आदि आठ विधानों को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें। आप सभी विधानों को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें, ऐसा मेरा कहना है। गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

-ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग – सुवर्ण पात्री मंगल आरती.. मराठी राग (चौपाई)

(तीर्थंकरों का सामान्य वर्णन)

आत्म उद्धारक विश्व प्रबोधक अनन्त ज्ञान सुख वीर्यवान्।
अनन्त दर्श के स्वामी भगवन्, घातीकर्म नाशक अरहन्॥ टेक॥

सोलह भावना बल पर बनते तीर्थंकर केवली महान्।
अतिशय युक्त पञ्चकल्याणों से होते हैं प्रभु शोभितवान्॥1॥

गर्भ से पूर्व होती रत्नवृष्टि माता देखती स्वप्न महान्।
देवों के द्वारा होती पूजित जिनेश माता पुण्य से जान॥2॥

जन्म होने पर होता अभिषेक पाण्डुक शिला पर महान्।
हजार आठ कलश के द्वारा देव करे उत्सव महान्॥3॥

राजकुमार राजा चक्री बन करते प्रजापालन श्रीमान्।
कोई बाल ब्रह्मचारी होते कोई विवाह भी करते जान॥4॥

बाह्य अन्तःकरणों से जब होता वैराग्य सौभाग्य जान।
लौकान्तिक करते अनुमोदन दिव्य पालकी से वनगमन॥5॥

सिद्धों को करके सुमिरन पञ्चमुष्टि केशलोंच करें महान्।
अन्तरंग-बाह्य परिग्रह तजकर निर्ग्रन्थ रूप धरे महान्॥6॥

गर्भ से होते त्रिज्ञानधारी क्षायिक सम्यग्दृष्टि महान्।
दीक्षा से होता मनःपर्यय भी चौंसठ ऋद्धि अलौकिक जान॥7॥

बाह्य-आभ्यन्तर तपस्या करते सात्विक आहार लेते जान।
इसी से होते पञ्च आश्चर्य आहारदान का गुण बखान॥8॥

शुक्ल ध्यान से श्रेणी आरोहण करके घाती कर्म करें हनन।
अनन्त चतुष्टय धारी बनकर साक्षात् तीर्थेश जान॥9॥

समवशरण की रचना होती देवकृत अति मनोहर/(चमत्कार)।
गन्धकुटी बाहर सभा मध्ये विराजमान होते भगवान्/(जिनवर)॥10॥

सर्वभाषामयी श्रीवाणी खिरे श्रवण करे पशु देव नर।
गणधर उसे गुन्थित करते द्वादश जिनवाणी का सार॥11॥

हमारी संघस्था उदीयमाना कवियित्री **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री** के द्वारा रचित **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'**, ये अनेक विधान लिखे हैं उनका सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री** भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व-पर विश्वकल्याण करते हुये स्वात्मोपलब्धि करें ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह-

-आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.
28-5-2012

सम्पादकीय-आशीर्वाद

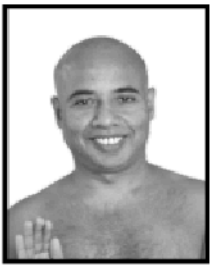

सोलहकारण दिव्य भावना, तीर्थंकर पद की दातार।
दशलक्षण आतम के लक्षण, करते पापों का परिहार॥
उनको भायें निशदिन ध्यायें, करने निज आतम उद्धार।
उनके धारक श्री जिन मुनि को, करते वंदन बारम्बार॥
पंचमेरु और नंदीश्वर के, जिनवर का हम करते ध्यान।
रविव्रत के श्री पार्श्वनाथ से, हो जाये मेरा उत्थान॥

भावनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे–सद्भावना, दुर्भावना, प्रशस्त भावना, अप्रशस्त भावना। प्रशस्त भावनाओं में बारह भावना, मेरी भावना, सोलहकारण भावनाओं आदि का समावेश होता है। इन सभी भावनाओं में सोलहकारण भावना सातिशय पुण्य भावना है।

जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि जैन आगम के अनुसार यदि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य पुण्यात्मा जीव किसी तीर्थंकरादि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में विधिबद्ध ढंग से इन सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करता है तो वह तीर्थंकर पुण्य प्रकृति का बंध कर सकता हैं।

इसके अतिरिक्त षोडशकारण की व्रत कथा के अनुसार मुनियों के प्रति दुर्व्यवहार करने का फल भोगने वाली कुरूपा निंदनीया कालभैरवी कन्या ने पश्चात्ताप के साथ इस व्रत को सम्पन्न किया। जिससे मुनि निंदा के पाप से बचकर उसी कन्या ने आगे स्त्रीलिंग को छेदन कर, सीमंधर तीर्थंकर के महान् पद को प्राप्त किया। अर्थात् मुनि निंदा के प्रायश्चित्त हेतु भी यह व्रत करना चाहिए।

वर्ष में तीन बार आने वाला यह पर्व हमें दिशाबोध देता है कि तीर्थंकर कैसे तीर्थंकर बने ?

हमारे आदर्श क्या हो ? साधारण मानव भी आगे कैसे तीर्थंकर बन सकता है।

इसी प्रकार दशलक्षण धर्म, आत्मा का धर्म है। जैन संस्कृति में दशलक्षण पर्व का विशेष महत्त्व है। पर्वों में महापर्व, पर्वाधिराज पर्यूषण को माना गया है। पर्यूषण पर्व भी वर्ष में तीन बार आता है किन्तु भाद्रपद मास में आने वाला दशलक्षण पर्व जैन समाज में विशेष रूप से मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन धर्मावलम्बी श्रावक चाहे देश में हो या विदेश में रहे। वह अनिवार्य रूप से भाद्रपद मास के पर्यूषण पर्व पर

अपनी सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए दस दिनों तक नियम संयम के साथ दशलक्षण धर्म की महा–आराधना करते हैं।

धूमधाम से गीत, संगीत, वाद्ययंत्रों के साथ पूजा विधान करते हैं। इसलिए समय–समय पर हमारे आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी व श्रावकों ने कभी प्राकृत भाषा में, कभी संस्कृत में कभी ढुढ़ारी भाषा में तो कभी हिन्दी में छोटे या बड़े रूप में अनेक प्रकार से सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है।

इसी श्रृंखला में **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपनी भक्ति काव्य कला का सद्पयोग करते हुए **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'** को लिखा है। माताजी एक ऐसी पुण्यात्मा है जिन्होंने मात्र तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में घर, परिवार त्याग कर ''आर्यिका विशालमति माताजी'' के मार्गदर्शन में अपनी अध्यात्म यात्रा प्रारम्भ की। तत्पश्चात् जैनागम का गहन अध्ययन करने के लिये **'वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव'** का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। धर्मपिता आचार्य गुरुदेव ने जहाँ आपको शास्त्राभ्यास कराया।

वहीं मर्यादा श्रमणमोत्तम आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने अपनी प्रथम शिष्या की आर्यिका दीक्षा अपने दीक्षा गुरु **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** से करवायी और इस तरह ब्रह्मचारिणी कुमारी लीला 17 फरवरी, 1997 को गुजरात प्रांत के अहमदाबाद नगर में **आर्यिका आस्थाश्री** बन गई। सन् 1994 से निरन्तर संघ में रहते हुए आपकी अध्यात्म साधना निरन्तर चलती रही।

दोहा– पंचमेरु के जिन भवन, उनमें जिन भगवान।
उनको ध्याऊँ रात–दिन, दर्शन दो भगवान॥

जैन संस्कृति में पंचमेरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ढाई द्वीप में पाँच मेरु होते हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच प्रथम सुमेरु पर्वत है। धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम भाग में विजय व अचल मेरु हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व व पश्चिम में मन्दर व विद्युन्माली मेरु हैं।

इनमें से प्रथम सुदर्शन मेरु की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है व अन्य चार मेरु पर्वतों की ऊँचाई चौरासी हजार योजन बतायी है। इन पाँच मेरुओं में (1) भद्रशाल (2) नन्दन (3) सौमनस (4) पाण्डुक नामक चार वन हैं। चारों वनों की चारों दिशाओं में चार–चार जिनालय हैं। प्रत्येक जिनालय में 500 धनुष ऊँची 108–108 जिन प्रतिमायें हैं। इस प्रकार एक मेरु के चारों वनों के 16 चैत्यालयों

की 108-108 जिन प्रतिमायें मिलाने पर एक मेरु की 1728 जिनप्रतिमायें होती हैं। जैन शास्त्रों में पाँचों मेरु की कुल आठ हजार छह सौ चालीस जिन प्रतिमायें बनायी हैं। उनमें सभी प्रतिमाओं में प्रत्येक के समीप सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष व श्रीदेवी और श्रुतदेवी की प्रतिमा भी शाश्वत स्थित है। प्रत्येक जिन प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य से विभूषित है।

पाँचों मेरु के पाण्डुक वनों की चार विदिशाओं में चार-चार शिलायें हैं। उनके क्रम से (1) पाण्डुक शिला (2) पाण्डुकम्बला शिला (3) रक्ता शिला और (4) रक्तकम्बला शिला नाम हैं। इन शिलाओं पर निर्धारित (भरत, ऐरावत, पूर्व, पश्चिम विदेह) क्षेत्र के बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

हम इसे प्रथम सुमेरु पर्वत से समझते हैं। सुमेरु के पाण्डुक वन की ईशान दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, आग्नेय दिशा में स्थित पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, नैऋत्य दिशा में स्थित रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का और वायव्य दिशा में स्थित रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्र के मेरु पर्वत के विषय में जानना चाहिए।

उन शिलाओं पर एक-एक सिंहासन और दो-दो भद्रासन होते हैं। जिनमें से सिंहासन पर बाल तीर्थंकर को विराजमान करके दोनों भद्रासनों पर सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी व ईशान इन्द्र-इन्द्राणी बैठकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसागर के फल से बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक करते हैं। वह क्षीर सागर का जल भी दूध के समान स्पर्श-रस-गंध-वर्ण वाला होता है। जैनाचार्यों ने 1008 कलश 8 योजन (96 किमी.) गहरे, चार योजन (48 किमी.) चौड़े व मुख 1 योजन (12 किमी.) का बताया है। ऐसे बड़े-बड़े 1008 कलशों से श्री बाल तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य चार मेरु पर्वतों व धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप के विषय में जानना चाहिए। पाँचों मेरु का सुन्दर-सा वर्णन 'श्री तिलोयपण्णत्ति', 'श्री त्रिलोक सार', 'श्री हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

पंचमेरु को लक्ष्य करके ही पंचमेरु पुष्पाञ्जलि व्रत किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से एक ब्राह्मण पुत्री ने क्रम से देवपद, मनुष्य होकर चक्रवर्ती पद व आगे उसी भव से सिद्धपद प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार आने वाले दशलक्षण पर्व की पंचमी से नवमी तक यह व्रत किया जाता है। व्रत में शक्ति अनुसार उपवास या एकाशन करके पंचमेरु का विधान किया जाता है।

दोहा– जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार॥

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट् श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 6 पूर्णार्घ हैं।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व

पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

इसमें 81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ है इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है।

नंदीश्वर विधान और भी अनेक विधानों की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। एक साथ **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव, चंदन षष्ठी विधान'** ये आठ विधान संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहे हैं। इन विधानों में माताजी ने शंभु, गीता, नरेन्द्र, जोगीरासा, कुसुमलता, चौपाई, अवतार, सखी, काव्य, दोहा, सोरठा, अडिल्ल, रोला, धत्ता, त्रिभंगी आदि अनेक छंदों का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। मूल में **सोमसेनाचार्य व अभयनंदी आचार्य** ने प्राकृत व संस्कृत भाषा में सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है व हिन्दी में **रईधु कवि** के दोनों विधान है। उन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान भाषा शैली में नये ढंग से सरल छन्दों में, सुलझे सरस शब्दों में माताजी ने बहुत ही सुन्दर रचना की है।

विधान लेखन के क्षेत्र में माताजी का रचना धर्म अत्यन्त सराहनीय, प्रशंसनीय है। इसके साथ माताजी ने एकीभाव व णमोकार विधान आदि अनेकों की भी रचना की है, जो प्रकाशित हो गये हैं।

आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है।

ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक व पूजक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

मंत्रों का राजा महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

यह णमोकार महामंत्र एक ऐसा मंत्र है। जिसकी महिमा को अतिशय को हर एक आचार्य ने अपनी वाणी में बताया है। इस मंत्र को छोटे से लेकर बड़े तक, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका कभी भी किसी भी समय सर्वप्रथम जपते हैं।

सबसे अधिक किसी मंत्र की महिमा का वर्णन या दृष्टान्त दिया जाता है तो वह णमोकार मंत्र है। जन्म से लेकर मरण तक यह णमोकार ही सबको सुनाया जाता है। इस णमोकार मंत्र को बोलने के लिये कोई स्थान विशेष नहीं देखा जाता है। जैनधर्म का ये मूलमंत्र है इसलिये सबसे पहले ये ही सिखाया जाता है। अन्य कोई मंत्र किसी को याद हो चाहे ना हो परन्तु ये मंत्र तो हरेक बच्चे-बच्चे को आता ही है। इस णमोकार मंत्र की शक्ति का कोई पार नहीं पा सकता।

स्वयं आचार्य, उपाध्याय, साधु, परमेष्ठी भी इस मंत्र के अन्तर्गत आते हैं, फिर भी ये तीनों परमेष्ठी भी णमोकार मंत्र को अवश्य जपते हैं। जब हम बीमार होते हैं तो औषधि लेते हैं, उससे ठीक होने पर भी औषधि लेते रहते हैं कि आगे बीमारी ना हो, जैसे शुगर वालों को शुगर की दवाई रोज लेनी पड़ती है। बी.पी. वाले बी.पी. कन्ट्रोल करने के लिए रोज गोली खाते हैं। वे दवाई खाकर स्वस्थ रहते हैं इसलिये रोज खाते हैं।

उसी प्रकार ये तीनों परमेष्ठी णमोकार मंत्र में गर्भित होने पर भी दिन-रात इस मंत्र को जपते रहते हैं और मंत्र जपने से इनको फायदा होता है इसलिये जाप करते हैं। जिस चीज से हमें फायदा होता है वह कार्य हमेशा करते रहना चाहिये। इस णमोकार मंत्र में 35 अक्षर है। ये पैंतीस अक्षर बड़े ही महत्वपूर्ण है। ये बीजाक्षर मंत्र है, एक-एक अक्षर में भी बड़ा सार भरा हुआ है। हर एक बीजाक्षर का अपना महत्त्व है। हर अक्षर कुछ न कुछ विशेषताओं से युक्त है। हर अक्षर का अर्थ अलग-अलग है। इस णमोकार मंत्र से ही 84 लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई। प्राणीमात्र को सुख देने वाला एक णमोकार मंत्र है। नवग्रह के दुःखों से बचने के लिये भी ये नवकार मंत्र ही बताया है।

इस मंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें किसी व्यक्ति विशेष को नमस्कार नहीं किया इसलिये यह मंत्र अनादि निधन है। किसी ने बनाया नहीं, कोई इसे मिटा नहीं सकता है। भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल के पाँचों परमेष्ठी को इसमें नमस्कार किया है। हमारा धर्म गुण पूजक है, व्यक्ति पूजक नहीं है। इसलिये ये मंत्र भी किसी जाति विशेष के लिए नहीं है। कोई भी इसका जाप कर सकता है, जिन्होंने अपनी आत्मा को प्राप्त कर लिया है। जो ज्ञान, ध्यान, साधना में रत है ऐसे परमेष्ठी का नाम कोई भी ले सकता है।

इस णमोकार के 35 अक्षरों पर ही मैंने यह णमोकार विधान लिखा है। इसमें पैंतीस अक्षरों के 35 अर्घ है और 6 पूर्णार्घ है। इस व्रत को हर कोई व्यक्ति कर सकता है। हमारे द्वारा जाने-अनजाने में हुये अपराधों की मुक्ति के लिये यह व्रत अवश्य करना चाहिये। इस व्रत को करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धी होती है।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है- इस व्रत को आषाढ़ सुदी सप्तमी से प्रारम्भ करें आषाढ़ का एक, श्रावण में दो, भाद्र मास में दो, अश्विन महीने के दो उपवास इस तरह सप्तमी के सात (7) उपवास करते हैं।

पंचमी के पाँच- कार्तिक कृष्णा पंचमी के दो, अगहन के दो, पौष का एक इस तरह पंचमी के पाँच उपवास।

14 उपवास- पौष कृष्णा चतुर्दशी से चैत्र कृष्ण चतुर्दशी तक 7 उपवासकरें। चैत्र शुक्ला से 14 से आषाढ़ कृष्णा चतुर्दशी तक 7 उपवास करें।

नवमी के नव उपवास- श्रावण कृष्णा नवमी से अगहन कृष्णा नवमी तक नव उपवास करें। इस प्रकार 35 उपवास द्वारा यह व्रत पूरा करना चाहिये। व्रत के समय अभिषेक पूर्वक नवकार मंत्र पूजन करें। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें। नहीं तो व्रत दुगुना करें। यह व्रत डेढ़ वर्ष में समाप्त करना चाहिये।

यह विधान दुःख-दारिद्र को हरने वाला है। हमारे जीवन का उत्थान करने वाला है। हम कभी भी यह विधान कर सकते हैं। व्रत करने की शक्ति नहीं हो तो भी यह विधान किया जा सकता है। विधान करके भी हम अपने पापों का नाश कर सकते हैं।

णमोकार विधान का मांडला

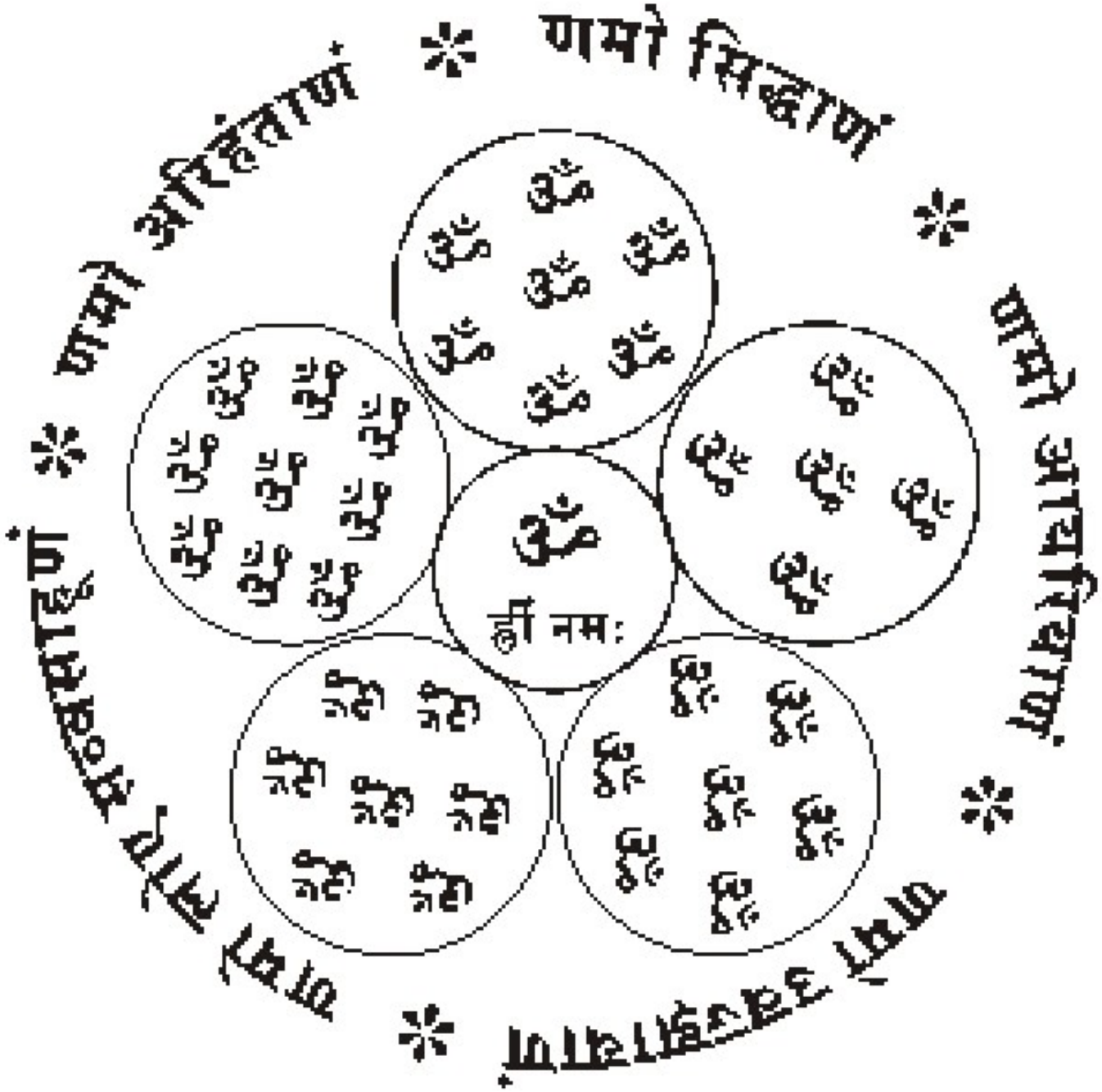

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणोंमें।।4।।

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दुःख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।

सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।

पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।

विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।

कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।

नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।

चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री णमोकार पूजा विधान

(गीता छंद)

सब मंत्र में जो श्रेष्ठ है वह मंत्र श्री नवकार है।
इसका ना आदि अंत है इस मंत्र की जयकार है।।
जिस मंत्र से उत्पन्न है चौरासी लख जिन मंत्र ये।
आह्वान हम इसका करें ये मंत्र-यंत्र व तंत्र है।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञ मुख समुद्भूत अनादिनिधन श्री अपराजित नाम मंत्राधिराज ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शेर छंद)

परमेष्ठी सर्व ॐ मंत्र में ही समाये।
हम ॐ ह्रीं बोलकर ही नीर चढ़ाये।।
णवकार महामंत्र का हम ध्यान लगायें।
उत्साह भक्ति भाव से विधान रचायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय शांति पुष्टयर्थं पवित्रतर जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरण कमल में भव्य गंध लगाये।
मंत्रित हुई वह गंध अपने शीश लगाये।। णवकार..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

एकाक्षरी ये मंत्र सिर्फ ॐ कहाये।
हम पाँच पुञ्ज अक्षतों के श्रेष्ठ चढ़ायें।। णवकार..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा व मंत्र जाप में हम ॐ बोलते।
पुष्पाञ्जलि चढ़ाके कर्म ग्रंथि खोलते।। णवकार..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐकार रूप में खिरे जिनवर की देशना।
नैवेद्य चढ़ा हम नशे क्षुधादि वेदना।।
णवकार महामंत्र का हम ध्यान लगायें।
उत्साह भक्ति भाव से विधान रचायें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन की करे भक्ति से भक्त नित्य आरती।
ये आरति हमारा मोहतम निवारती।। णवकार..।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पैंतीस अक्षरों को हम नमन करें त्रिकाल।
ये धूप ही नशाये सर्व कर्म का बवाल[1]।। णवकार..।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब अनादि मंत्र की महार्चना करें।
पाने को मंत्र शक्ति हम फलार्चना करें।। णवकार..।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से णमोकार का विधान हम करें।
उत्तम मनोज्ञ अर्घ सजा नृत्य हम करें।। णवकार..।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परमेष्ठी पाँचों प्रभु, वंदनीय त्रिकाल।
शांतिधारा हम करें, और चढ़ाये माल।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र – णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

1. आफत, परेशानी।

जयमाला

दोहा– णमोकार यह मंत्र है, जिसके नाम अनेक।
इसकी जयमाला पढ़ें, पाने शिव सुख एक॥

(शंभु छंद)

सुख सन्तति धन वैभव मिलता, इस महामंत्र को पढ़ने से।
ऋद्धि–सिद्धि यश कीर्ति बढ़े, इस महामंत्र को पढ़ने से॥
सम्पूर्ण पाप क्षय होते हैं, इस महामंत्र को पढ़ने से।
अरहंत सिद्ध बन जाते हैं, इस महामंत्र को पढ़ने से॥1॥

अपमृत्यु भी टल जाती है, इस णमोकार को पढ़ने से।
हो जाय समाधि समता से, इस णमोकार को पढ़ने से।।
दृष्टि विकार नहीं होता है, इस णमोकार को पढ़ने से।
सर्वांग सुरक्षित होता है, इस णमोकार को पढ़ने से॥2॥

नवग्रह भी सब अनुकूल बने, इस णमोकार को पढ़ने से।
नश जाय कुमंत्रों का प्रयोग, इस णमोकार को पढ़ने से॥
जादु मंत्रर मुठादि नशे, इस णमोकार को पढ़ने से।
कर्जा उतरे व्यापार बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से॥3॥

विषधर का विष अमृत होवे, इस णमोकार को पढ़ने से।
वैरी भी उत्तम मित्र बने, इस णमोकार को पढ़ने से॥
साधक के मैत्री भाव बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से।
सुख–शांति और आनंद बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से॥4॥

डाकिन–शाकिन–भूतादि भगे, इस णमोकार को पढ़ने से।
भयभीत जीव निर्भय होते, इस णमोकार को पढ़ने से॥

आँधी तूफाँ में प्राण बचे, इस णमोकार को पढ़ने से।
बिजली भूकम्प व बाढ़ नशे, इस णमोकार को पढ़ने से।।5।।

सब विद्यायें हो जाय सिद्ध, इस णमोकार को पढ़ने से।
प्रतिभा सम्पन्न सभी बनते, इस णमोकार को पढ़ने से।।
हर जगह सफलता मिलती है, इस णमोकार को पढ़ने से।
सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं, इस णमोकार को पढ़ने से।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम ब्रह्मणे अनंतानंत ज्ञान शक्तये णमोकार महामंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

चलते-फिरते सोते-उठते, खाते-पीते जाप करें।
तीव्र वेदना या संकट में, हरपल मन में जाप करें।।
मानस वाचिक या कायिक हम, णमोकार का जाप करें।
'आस्था' से हम ये विधान कर, सारे संकट पाप हरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलम्।।

इति पंच परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो पंचागप्रणामः कुर्यात्।

(शंभु छंद)

हे पाँच पदों को नमस्कार, यह नमस्कार सब पाप हरें।
सबका मंगल करने वाला, सम्पूर्ण अमंगल दूर करें।।
मंगल में पहला मंगल है, इस मंगल को है नमस्कार।
अरिहंत सिद्ध सूरि पाठक, सब मुनिराजों को नमस्कार।।

(यहाँ सिर झुकाकर नमस्कार करना चाहिये।)

विधान प्रारम्भ

(दोहा)

महामंत्र णवकार को, पढ़े सुने जो कोय।
स्वर्गादिक व मोक्ष में, उसकी सद्गति होय।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

णमो अरहंताणं के अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

ण– **णमोकार में सर्व प्रथम हम, अरिहंतों को ध्यायें।**
ॐ णमो अरिहंताणं को, पहले अर्घ चढ़ाये।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, श्री अरिहंत कहाते।
हम सब इन अरिहंत प्रभु की, पूजा कर हर्षाते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– **मोक्ष मार्ग के सच्चे नेता, सबको मार्ग बताते।**
मोह कर्म को नाशे भगवन, सुख अनंत को पाते।। वीतराग..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अ– **अतिशयकारी जिन प्रतिमायें, अतिशय नित दिखलायें।**
चारों पुरुषार्थों की सिद्धि, अर्हत् भक्ति कराये।। वीतराग..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र– **रक्षक ही रक्षा करता है, और करे ना कोई।**
तुमसे बढ़कर रक्षक जग में, और कभी ना होई।। वीतराग..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'र' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हं– **हनन किया कर्मों का प्रभु ने, चार घातियाँ नाशे।**
केवलज्ञानी श्री प्रभुवर के, सर्व चराचर भाषे।। वीतराग..।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ता– तारणहारे तुम हो स्वामी, सबको तुमने तारा।
तुमको तारणहार समझकर, हमने लिया सहारा।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, श्री अरिहंत कहाते।
हम सब इन अरिहंत प्रभु की, पूजा कर हर्षाते।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ता' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– नमन करें सब अरिहंतों को, चार चतुष्टय धारी।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, हम सबके उपकारी।। वीतराग.. ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

तीन लोक त्रयकालवर्ती सब, अरिहंतों को ध्यायें।
णमो अरिहंताणं पद को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।
तीर्थंकर उपसर्ग अन्तकृत, मुक और सामान्य प्रभु।
समुद्घात अनुबद्ध केवली, ये सातों अर्हंत् प्रभु।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो अरिहंताणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो सिद्धाणं के अर्घ

दोहा– दूजा पद णवकार का, उसमें हैं प्रभु सिद्ध !।
सिद्ध प्रभु को हम भजें, बन जायें हम सिद्ध।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

ण– णमोकार यह मंत्र, सर्व सुखों का दाता।
ये ही मंगल श्रेष्ठ, ये ही शरण कहाता।।

ॐ नमः सिद्धाय, हम यह ध्यान लगायें।
सब सिद्धों को पूज, आतम शक्ति जगायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोहादि वसु कर्म, सर्व सिद्ध विनशायें।
गुण अनंत विध रूप, सहज प्रगट हो जाये।। ॐ नमः।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सि– सिद्ध हुये जो नाथ, फिर जग में ना आयें।
उन सिद्धों को आज, हम सब अर्घ चढ़ायें।। ॐ नमः।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सि' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्धा– ध्यान बताये चार, उसमें दो उपयोगी।
धर्म शुक्ल को ध्याय, हम भी बने अयोगी।। ॐ नमः।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'द्धा' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार का जाप, सिद्ध भक्ति हम बोलें।
सर्व सिद्धि के हेत, अन्तर्मन को धोले।। ॐ नमः।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

पंचरंगी ध्वज एक हाथ में, दूजे कर में थाली।
पंच अक्षरी प्रभु की पूजा, देती है खुशहाली।।
ॐ णमो सिद्धाणं पद का, जाप करें सुख पायें।
पंच परावर्तन को नशने, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो सिद्धाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो आयरियाणं के अर्घ

दोहा– अमृत रस बरसे सदा, देते गुरुवर ज्ञान।
गुरु का सद उपदेश ही, देता सम्यक् ज्ञान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

ण– णमोकार की शक्ति अपरम्पार है।
वंदन करते हम इसको त्रय बार है।।
णमो आइरियाणं की पूजा करें।
ये आचार्य हमारे सारे दुःख हरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोक्ष महल पाने करते गुरु साधना।
उन आचार्यों की करते आराधना।। णमो...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आ– आचार्यों को भक्ति से हम दान दें।
परम्परा से दान मोक्ष स्थान दें।। णमो...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इ– इन्द्रिय मन को इन गुरुओं ने वश किया।
तप संयम समता से तन को कृश किया।। णमो...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'इ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि– रिद्धि सिद्धि धारी श्री गुरुवर को नमन।
भाव भक्ति से करते हम उनका भजन।। णमो...।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रि' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या– याद करें हम सुख–दुःख में गुरु नाम को।
त्रय भक्ति से उनको नित्य प्रणाम हो।। णमो...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'या' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार का जाप करें नो बार हम।
चलते – फिरते ध्यायें बारम्बार हम।।
णमो आइरियाणं की पूजा करें।
ये आचार्य हमारे सारे दुःख हरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

सप्तअक्षरी पूजा तीजी, णमो आइरियाणं की।
जय बोले पंचाचारी की, णमो आइरियाणं की।।
मोक्ष मार्ग के हित उपदेशक, श्री आचार्य हमारे।
ये पूर्णार्घ चढ़ाने हम सब, आये गुरु के द्वारे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो आइरियाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो उवज्झायाणं के अर्घ

(दोहा)

शिक्षक पाठक ये गुरु, देते सम्यक् सीख।
ये जग तारण तरण हैं, इन्हें नमावे शीश।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(चौपाई)

ण– णमोकार ये मंत्र हमारा, इसी मंत्र ने सबको तारा।
महामंत्र को मन से ध्यायें, भाव सहित हम अर्घ चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोक्ष मार्ग का पाठ पढ़ाते, वे ऋषिवर शिक्षक कहलाते।
हम सब उनको अर्घ चढ़ायें, उन सम प्रज्ञा दीप जलायें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उ– उपाध्याय गुरु शिक्षा देते, शिष्य शरण में शिक्षा लेते।
चारों ही अनुयोग पढ़ाते, हम सब उनको अर्घ चढ़ाते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व– वसु विधि द्रव्य सजाकर लाये, वसुधा अष्टम हम सब पायें।
अंत समय मुनियों का आये, यही मंत्र मुनि उन्हें सुनाये।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्झा– ज्झाण[1] ज्झयण[2] तुम्हारी चर्या, भक्त कराते उनकी चर्या।
छम–छम घुंघरु वाद्य बजाते, उनको अर्घ मनोज्ञ चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ज्झा' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या– याद गुरु की हमको आये, गुरु बिन हमको कौन तिराये।
सर्व दुःखों से गुरु बचाये, उनको हम सब अर्घ चढ़ायें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'या' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार यह मंत्र अनादी, इसने मेटी सबकी व्याधी।
उपाध्याय भगवान हमारे, इनकी पूजा कष्ट निवारे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

ॐ णमो उवज्झायाणं की, सप्त अक्षरी पूजा।
सप्त परम स्थान दिलाये, पाठक गुरु की पूजा।।
करें विधान विधिपूर्वक हम, सुखद सुफल पा जाये।
त्रयकालिक सब उपाध्याय को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो उवज्झायाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ज्ञान, 2. ध्यान।

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो लोए सव्व साहूणं के अर्घ

दोहा– सर्व परिग्रह जो तजे, विषयों से जो दूर।
ज्ञान ध्यान तप नित करे, करें कर्म चकचूर।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(शेर छंद)

ण– णवकार महामंत्र का हम जाप करेंगे।
पूजन विधान जाप करके पाप हरेंगे।।
णमोकार महामंत्र की विशेष अर्चना।
मम सर्व कर्म को हरे ये मंत्र अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोदक चढ़ाये मोक्ष पाने मोद भाव से।
पूजा से परम पुण्य मिले मोद भाव से।। णमोकार...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो– लोभादि कषायें नशाने जो मुनि बने।
ऐसे गुरु को द्रव्य हम, चढ़ायें अनगिने।। णमोकार...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'लो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ए– एकत्व आदि भावना मुनिराज भा रहे।
एकाक्षरी में एं बीजाक्षर को ध्या रहे।। णमोकार...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ए' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स– सम्यक्त्व की सुगंध मुनिराज में मिले।
हमको गुरु की वाणी से, सम्यक् निधि मिले।। णमोकार...।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व– वरदान हमें धर्म का प्रदान कीजिये।
जिनधर्म में बुद्धि रहे आशीष दीजिये।।
णमोकार महामंत्र की विशेष अर्चना।
मम सर्व कर्म को हरे ये मंत्र अर्चना।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्व' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा– साधु जहाँ चरण धरे वो तीर्थ धाम है।
साधु की साधना को कोटीशः प्रणाम है ।। णमोकार...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हू– हुये यहाँ उपसर्ग मुनिराज पे कभी।
समता धरे उपसर्ग सहे वे मुनि सभी।। णमोकार...।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हू' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार की यह कार हमें मोक्ष दिलाये।
यह कार दुर्गतियों के दुःखों से बचाये।। णमोकार...।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

नव अक्षर का अंतिम पद ये, नवग्रह दोष मिटाये।
अंतिम पद के नव अक्षर में, सर्व साधु सब आये।।
क्रुर ग्रहों की प्रतिकूलता, सर्व साधु विनशाये।
उन गुरुओं के चरण कमल में, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो लोए सव्व साहूणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पाँचों परमेष्ठियों का पूर्णार्घ

(शंभु छंद)

पैंतीस अक्षर की पूजा में, पाँचों परमेष्ठी हम ध्यायें।
चल अचल तीर्थ के परमेश्वर, ये सर्व अमंगल विनशाये।।
पैंतिस फल ध्वज पैंतिस दीपक, पैंतीस मिठायी मालायें।
पैंतीस अर्घ की थाल सजा, पूर्णार्घ चढ़ाने हम आये।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम ब्रह्मणे पंच परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

णमोकार महामंत्र में, परमेष्ठी भगवान।
मंगल उत्तम शरण में, ये ही सब भगवान।।
शांति करो सब लोक में, करें प्रार्थना आज।
पुष्पों की माला चढ़ा, धन्य हुये हम आज।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- (1) णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा।।
(2) ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें पंचरंगी पुष्प या धूप लवंग चढ़ाकर)

समुच्चय जयमाला

धत्ता- महामंत्र हमारा, हमको प्यारा, इसकी जयमाला गायें।
यह मंत्र श्रवणकर, पठन मनन कर, जनम-मरण दुःख मिट जाये।।

(शंभु छंद)

इस ढ़ाई द्वीप में तीन लोक में, पाँचों परमेष्ठी होते।
ये मंगल उत्तम और शरण, पाँचों ही पद में ये होते।।

इस महामंत्र को नमस्कार, सब परमेष्ठी को नमस्कार।
अरिहंत सिद्ध सूरि पाठक, साधुगण को हैं नमस्कार।।1।।
श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हित उपदेशक जग के स्वामी।
अष्टादश दोष विमुक्त प्रभो, अरिहंत देव अन्तर्यामी।।
आठों कर्मों से रहित सिद्ध, बसते शाश्वत सिद्धालय में।
सिद्धों की सिद्ध भक्ति करते, पूजा करते भक्ति लय से।।2।।
शिष्यों को शिक्षा-दीक्षा दे, पालन-पोषण सबका करते।
छत्तीस मूलगुण के धारी, आचार्यों को वंदन करते।।
जो पढ़े-पढ़ावे रात दिवस, वो उपाध्याय कहलाते हैं।
आगम ही जिनके चक्षु हैं, उन मुनियों के गुण गाते हैं।।3।।
पाँचों पद के पैंतीस अक्षर, मात्रा होती है अट्ठावन।
स्वर चौंतिस कहते मंत्र विज्ञ, और तीस बताये हैं व्यंजन।।
स्वर व्यंजन दोनों चौंसठ है, श्रुतज्ञान का विरलन भी चौंसठ।
श्री द्वादशांग जिनवाणी के, श्रुतज्ञानाक्षर होते चौंसठ।।4।।
मन-वच-काया से ध्यान लगा, इस महामंत्र का जाप करें।
प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में, हम णमोकार का पाठ करें।।
बच्चों को जैन बनाते जब, उसको नवकार सुनाते हैं।
जीवन का अंत समय आवे, तब भी णवकार सुनाते हैं।।5।।
जिसने श्रद्धा से मंत्र सुना, उसका निश्चय उद्धार हुआ।
आगे-पीछे पढ़ सुनकर भी, हर प्राणी भव से पार हुआ।।
अंजन तस्कर ने मंत्र जपा, सिद्धात्म निरंजन पद पाया।
इससे ही सेठ सुदर्शन ने, शूली से सिंहासन पाया।।6।।
सीता सोमा चंदन मैना, द्रोपदी मनोरम मनोवती।
अंजना सुन्दरी आदिक ने, इसको ध्या पाई उच्च गती।।

कपि श्वान बैल गज सिंह नाग, इन सबने भी नवकार सुना।
इस मंत्रराज की महिमा से, मर करके उत्तम स्वर्ग चुना।।7।।

इस णमोकार के व्रत में जो, पैंतीस श्रेष्ठ उपवास करें।
व्रत के अतिशय से मुनिव्रत पा, अविराम आत्म उत्थान करें।।
आषाढ़ सुदी सप्तम तिथि से, इस व्रत को हम प्रारम्भ करें।
फिर डेढ़ वर्ष तक यह व्रत कर, उद्यापन से सम्पूर्ण करें।।8।।

सुख-दुःख दोनों ही घड़ियों में, हम णमोकार का जाप करें।
इक महामंत्र ही ऐसा है, इसका कैसा भी जाप करें।।
मन-वच-काया त्रय गुप्ति से, इक माला तो निशदिन फेरे।
'आस्था' भी शिवसुख पा जाये, यह मंत्र बसे अंतस मेरे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, अशांति, क्लेश, पाप, ताप, संकट, पीड़ा, रोग, शोक, कष्ट, अपमृत्यु, अपघात, तनाव, चिंता, उपसर्ग, दुर्भिक्ष, विवाद, आधि-व्याधि, शारीरिक, मानसिक कर्म, कोरोना ज्वारादि निवारणाय, सुख-शांति आरोग्य, धन, सुत संपत्ति, ऋद्धि-सिद्धि जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय पंच परम पद दायक श्री णमोकार महामंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

महामंत्र के इस विधान से, अपने कष्ट मिटाये।
आज्ञाकारी सुत व नारी, धन-यश-कीर्ति पाये।।
ऋद्धि-सिद्धि सुख शांति पाकर, धर्म प्रभाव बढ़ाये।
सर्व कामना पूर्ण करें ये, शिव साम्राज्य दिलाये।।

दोहा- **णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।**
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

विधान की प्रशस्ति

दोहा

आदि शांति पारस प्रभु, नमूँ वीर भगवान।
पाँचों परमेष्ठी प्रभु, कर दो मम कल्याण।।1।।

जिनवाणी माँ दो मुझे, सद्बुद्धि सद्ज्ञान।
गणधर प्रभु की भक्ति से, पूर्ण करूँ अभियान।।2।।

महावीर कुंथु कनक, गुप्तिनंदी गुरुराय।
सब गुरुओं के चरण में, आस्था शीश झुकाय।।3।।

गुरु पूर्णिमा से लिखा, श्री नवकार विधान।
अल्प समय में हो गया, मंगल मंत्र विधान।।4।।

इस अपराजित मंत्र का, होवे सदा विधान।
जब तक सूरज चाँद है, भक्त करें कल्याण।।5।।

भक्ति भाव के वश लिखा, श्री नवकार विधान।
छंद ज्ञान मुझको नहीं, क्षमा करें विद्वान।।6।।

आस्था से 'आस्था' जपे, महामंत्र णवकार।
ॐ ॐ जपते-जपते, हो 'आस्था' भव पार।।7।।

'इति अलम्'

णमोकार विधान की आरती

(तर्ज : सगला चालो रे, इंजन की सीटी में...)

आओ-आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ, चले आओ।
ढ़ोल मंजीरा घुँघरु लेकर आरती गाओ॥ आओ-आओ रे....

1. इस विधान की आरती में हम, मंगल वाद्य बजाये।
महामंत्र की आरती करने, पैंतीस द्वीप जलाये॥
आओ-आओ रे...

2. महामंत्र ये मंगलकारी, सबका कष्ट मिटाये।
श्रद्धा से जो पाठ करे तो, सब संकट टल जाये॥
आओ-आओ रे....

3. सब कुछ भूले भले प्रभो हम, मंत्र भूल ना जाये।
ये ही प्रभु वरदान हमें दो, णमोकार को ध्याये॥
आओ-आओ रे....

4. सोते-उठते, चलते-फिरते, महामंत्र को ध्याये।
अंत समय भी णमोकार जप, अंतिम पद पा जाये॥
आओ-आओ रे...

5. सबसे प्यारा मंत्र हमारा, ॐ णमो सुखकारी।
'आस्थाश्री' भी त्रिगुप्ति से, भक्ति करे तुम्हारी॥
आओ-आओ रे....

***

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय.....

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति संहिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्टी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनककनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनककनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)